READING AND REFLECTING ON TEXT EPC - I

1st Semester, Session - 2020-2022

The Role of Language
भाषा की भूमिका

भाषा का उपयोग विश्व के सभी समाजों में व्यक्तियों द्वारा किया जाता है। अतः भाषा शब्द की रचना संस्कृत के 'भाष' शब्द से हुई, जिसका अर्थ - 'व्यक्त वाणी' है। भाषा शब्द संकुचित और व्यापक दो अर्थों में प्रयुक्त होता है। संकुचित अर्थ में भाषा - शब्दमयी और अभिव्यक्ति का माध्यम है। इस प्रकार मानव समाज जिस सांकेतिक माध्यम से अपने भावों और विचारों का आदान - प्रदान करता है, उसे भाषा कहते हैं।

व्यापक रूप में, संसार के विभिन्न प्राणियों द्वारा प्रयुक्त भावाभिव्यक्ति के साधनों यथा - अंग-प्रत्यंगों के संचालन, भाव-मुद्राओं और ध्वनि संकेतों को भाषा कहा जाता है। भाषा, मानव समाज की उन्नति और सफलता का मूलाधार है। भाषा के शिक्षक को व्यापक अर्थ में ही भाषा शब्द को ग्रहण करना चाहिये।

भाषा का अर्थ

भाषा ध्वनि चिन्हों का वह क्रमबद्ध समूह है, जिसके माध्यम से एक व्यक्ति अपने विचार, इच्छाएं तथा भाव दूसरे व्यक्ति के लिए व्यक्त करता है तथा दूसरों के विचार, इच्छाएँ और भाव ग्रहण करता है। किसी भी व्यक्ति के व्यक्तित्व का दर्शन भाषा ही कराती है। अतः भाषा जीवन जीने के लिए एक अभिन्न, अनिवार्य तथा आवश्यक माध्यम है। भाषा के अभाव में सुरक्षित जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती है।

शिक्षाशास्त्रियों ने भाषा के ऊपर अनेक परिभाषाएं दी हैं :-

1. श्यामसुन्दर दास :- "भाषा ध्वनि संकेतों का व्यवहार है।"

Scanned by TapScanner

2. सुमित्रानन्दन पन्त के अनुसार — "भाषा संसार का नादमय चित्र है, ध्वनिमय स्वरूप है, यह विश्व की हृदय तन्त्री की झंकार है, जिनकी स्वर में अभिव्यक्ति होती है।"

3. काव्यादर्श के शब्दों में, —

इदमध्यतम् कृत्सनं जायेत् भुवन त्रयम्
यदि शब्दाह्वयं ज्योतिरासंसार न दीप्यते।

अर्थात: — "यह समस्त तीनों लोक अन्धकारमय हो जाता, यदि शब्दरूपी ज्योति से यह संसार प्रदीप्त न होता।"

4. स्वीट के शब्दों में, — "भाषा स्वर एवं ध्वनि के द्वारा विचारों का अभिव्यक्तिकरण है।"

5. सीताराम चतुर्वेदी के अनुसार, — "भाषा के आविर्भाव से समस्त मानव संसार गूँगों की विराट बस्ती से बच गया।"

उपर्युक्त परिभाषाओं से स्पष्ट है कि भाषा ध्वनि प्रतीकों की एक ऐसी व्यवस्था है, जिसके द्वारा वक्ता और श्रोता परस्पर विचार विनिमय करते हैं। यह विनिमय दो रूपों में होता है — मौखिक और लिखित। मुख से उच्चरित भाषा को लिपिबद्ध किया जा सकता है, समाज और संस्कृति के उन्नयन हेतु भावी पीढ़ी के लिये हस्तान्तरित भी किया जा सकता है। भावात्मक भाषा का सम्बन्ध हमारे भावों एवं संवेगों से है जबकि प्रतीकात्मक भाषा का सम्बन्ध हमारे बौद्धिक विचारों एवं चिन्तन से है। वस्तुतः भाषा मानवीय विकास की पर्याय कही जा सकती है। मनुष्य आज के सामाजिक परिवेश में भाषा के कारण अधिक समर्थ, शिक्षित एवं विकसित कहा जा सकता है। समाज भाषा की एक अनिश्चित परम्परा है। इस परम्परा में मानव शिशु भाषा का अवलम्ब लेकर ही सामाजिक

की चौखट पर खड़ा होता है तथा सामाजिक प्राणी कहलाने लगता है। मानव अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति, विचारों एवं भावों की- अभिव्यक्ति एवं ज्ञानार्जन वह भाषा पर ही निर्भर करता है तथा जीवन के बहुआयामीय विकास और प्रगति के दौड़ में सम्मिलित होने, ज्ञान विज्ञानमय नवीन तकनीक प्रधान युग में जीने हेतु भाषा मानव के विकसित स्वरूप से साक्षात्कार करता है। भाषा ने ही मानव को गहन अज्ञान अन्धकार में डूबने से ~~बचाने~~ बचा लिया तथा मानव की सामाजिक, सांस्कृतिक तथा आध्यात्मिक विरासत को न केवल संरक्षित किया वरन् उसमें सम्वर्द्धन हेतु मनुष्य को उत्प्रेरित भी किया। निःसंदेह मानव सभ्यता के विकास में भाषा सबसे बड़ी शक्ति है। भाषा से मनुष्य मन के भाव प्रकट करता है। संगीत रचना, गीत, साहित्य, सृजन आदि सभी भाषा के आविष्कार के ही कारण है। भाषा से ही क्षेत्र, प्रान्त और राष्ट्र से सम्बन्ध स्थापित होती है। भारत में अनेक प्रकार की भाषाएँ प्रचलित हैं।

Scanned by TapScanner